ई कंटेंट

औपनिवेशिक काल में महिला शिक्षा के प्रयास एवं द्वंद्व

डॉ. श्रुति
आचार्य, हिन्दी विभाग
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

औपनिवेशिक काल में महिला शिक्षा के प्रयास एवं द्वंद्व

'हम यह विपदाभरी जिंदगी क्यों जिए ?चोरों की तरह हम अपनी जिंदगी जेलखानों में बिताते है| सिर्फ महिलाओं के रूप में जन्म लेने के कारण हमें शिक्षा से भी वंचित किया जाना चाहिए ?' यह प्रश्न भारतीय भाषाओं में सम्भवतः पहली आत्मकथा लेखिका रस सुंदरी देवी ने , १८१० में ,सभ्य समाज से पूछा| उनकी आरंभिक शिक्षा पितृगृह में हुई थी ,जहाँ एक मिशनरी महिला लड़कों के लिए पाठशाला चलाती थी |उन्हें लड़कों से दूर बैठाया जाता था और प्रश्न पूछने की इजाजत नहीं थी |वह खुशकिस्मत थीं क्योंकि उन्नीसवीं शती की सामान्य महिलाओं को ऐसा अवसर भी सुलभ नहीं था |विशेषकर बंगाल में ऐसा विश्वास किया जाता था कि महिला का साक्षर होना निश्चित वैधव्य का कारण है| कुछ जमींदार एवं तालुकेदार घरानों में जहाँ समय - असमय स्त्रियों को जमीन - जायदाद का भी प्रबंध करना पड़ता था , वहाँ महिलाओं को सामान्य शिक्षा दी जाती थी , उच्च शिक्षा की अधिकारिणी वे स्त्रियां भी नहीं थीं |

उन्नीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध के औपनिवेशिक काल में स्त्रियों के सरोकारों से सम्बंधित जो अनेक मुद्दे शुरू हुए उसके फलस्वरूप , स्त्रियों को शिक्षित करने के महत्त्व पर सबसे पहली सार्वजनिक बहस राजा राम मोहन राय द्वारा १८०५ में स्थापित 'आत्मीय सभा ' के तत्वाधान में बंगाल में छेड़ी गयी |यहाँ यह गौरतलब है कि स्त्री शिक्षा से सम्बंधित स्कूल सबसे पहले अंग्रेज और ईसाई मिशनरियों द्वारा शुरू किये गए |यद्यपि उसके पहले बंगाल के कुलीन परिवारों की शिक्षिकाएं वैष्णव महिलाएं या साध्वियां हुआ करतीं थी |गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर की माता की शिक्षा

ऐसी ही एक साध्वी के माध्यम से हुई थी , किन्तु उन्नीसवीं शती का अंग्रेजी शिक्षित बांगला भद्रलोक अपने अंग्रेजी आदर्शों के प्रभाव से देसी परपराओं को हेय और कुछ हद तक घृणित दृष्टि से देखता था |फलस्वरूप धीरे -धीरे वैष्णव शिक्षिकाएं परिदृश्य से गायब होती गयीं और बांगला भद्र महिलाओं की शिक्षा मिशनरी आदर्शों से परिचालित होने लगी |१८२७ तक हुगली जिले में , मिशनरियों द्वारा १२ कन्या पाठशालाएं चलाई जाने लगीं |ऐसा देखा गया कि गरीब इलाकों में खुले स्कूलों के बारे में जानने के लिए मुस्लिम स्त्रियां भी दिलचस्पी ले रहीं थीं | उस समय धार्मिक पाठो कीअनिवार्यता के कारण मुस्लिम और सिख महिलाएं हिंदू महिलाओं सेअधिक साक्षर भी थीं|

किन्तु स्त्री शिक्षा की राह अधिक सरल नहीं थी |१८५६ में हेनरी डेरेजियोके पत्र 'यंग बंगाल ' में किसी भद्रलोक के विचार प्रकाशित हुए ' स्त्रियों को पुरुषों के समस्तर शिक्षित करने की आवयश्कता नहीं है |महिलाओं का एक ही स्रोत है घर |उनके जीवन का उद्देश्य है घरेलू प्रेम ,पति के लिए सुख सुविधा ,बच्चों का लालन - पालन एव घरेलू खर्चों की [किंचित]देखभाल ....|'पूनामें रहने वाले ज्योतिराव [ज्योतिबा]फुले को जातिवादी हिंदुओं के हाथों असह्य यातना सहनी पड़ी क्योंकि वे अछूतों विशेषकर लडकियों की शिक्षा द्वारा उनके स्तर को ऊँचा उठाने का प्रयास कर रहे थे |आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने कहा -'जो शिक्षा स्त्रियों को मेम वा निर्लज्ज बना दे ,वह शिक्षा नहीं वरन कुशिक्षा है ......उसके हम विरोधी हैं|' अत: १८६० के दशक में यह विचार व्यापक स्तर पर उभरा कि स्त्रियों को शिक्षित क्यों किया जाना चाहिए और उनकी शिक्षा में क्या -क्या विषय होने चाहिए ? भारतीय संस्कृति बनाम अंग्रेजियत [मेमीकरण] का मुद्दा

प्रमुख था |

१८८४ में 'रुकमाबाई प्रसंग ' ने भी रूढ़िवादी लोगों को स्त्री शिक्षा के विरोध में खड़े होने का अवसर प्रदान किया |उनके पति दादाजी भीकाजी ने अदालत में रुकमाबाई पर आरोप लगाया कि बचपन में विवाह के पश्चात उसने शिक्षा प्राप्त कर ली जिसके फलस्वरूप वह दादाजी भीकाजी के साथ रहने को तैयार नहीं|बम्बई हाईकोर्ट में दादाजी की अपील मंजूर हो गयी लेकिन रुकमाबाई ने न्यायालय के निर्णय को मानने से इंकार कर दिया जिसके फलस्वरूप उन्हें जुर्माना और जिलाबदर की सजा दी गयी |रुकमाबाई ने इंग्लैण्ड जाकर एम.डी. उपाधि प्राप्त की और भारत लौट कर काफी दिनों तक डाक्टरी की |इसी समय पंडिता रमाबाई भी एक जीवित आदर्श की तरह सामनें आईं|जिनकी विद्वता , विचारों की स्पष्टता और वाक्पटुता से चकित होकर कलकत्ता के पंडितों ने उन्हें उनके सामने ही 'सरस्वती ' की उच्चतम उपाधि दी थी |यद्यपि उनके पिता अनंतशास्त्री को अपनी पत्नी को शिक्षित करने के कारण बिरादरी से बहिष्कृत होकर जंगल में घर बनाना पड़ा था |

सुदूर पंजाब में स्त्री शिक्षा की स्थिति भिन्न थी |वहाँ ईसाई मिशनरियों द्वारा संचालित स्कूल थे किन्तु कालांतर में आर्य समाज स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में प्रमुख केंद्र के रूप मे उभरा| इससे सम्बंधित एक दिलचस्प घटना है - जालंधर समाज के प्रतिष्ठित सदस्य लाला मुंशीराम की आत्मकथा में है -'एक दिन वे घर आये तो उनकी पुत्री वेदकुमारी मिशन स्कूल में सीखे एक गीत की पंक्तियाँ गाते -गाते दौड़ते हुए आई -'एक बार ईसा-ईसा बोल |तेरा क्या लगेगा मोल ?ईसा मेरा राम -रमैया |ईसा मेरा कृष्ण कन्हैया |'लाला मुंशीराम हतप्रभ रह गए |इस गीत में वह राम और कृष्ण का ईसाईकरण होते हुए देख रहे थे |फलस्वरूप

१८८६ की अंतरंग सभा में जालंधर समाज ने जनाना स्कूल खोलने का निर्णय लिया |पंडिता सुरिंदर बाला ,माई भगवती ,गुरु बीबी देवी जैसी महिलाओं के नाम , पंजाब में उच्च शिक्षा प्राप्त करने या शिक्षा के प्रसार में तल्लीन रहने वालों में गिने जा सकते हैं |

उन्नीसवीं शती के उत्तरार्द्ध तक स्त्री शिक्षा का व्यापक प्रभाव दिखने लगा| सार्वजनिक जीवन में विद्रोही स्त्रियों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई |निरुपमा देवी एवं अनुपमा देवी जैसी लब्ध प्रतिष्ठ उपन्यास लेखिकाओं का उदाहरण बंगाली साहित्य में दिया जाने लगा |वे साक्षरता क्लब की भी सदस्यता थीं |यह बात भी महत्वपूर्ण है कि उनके कृतित्व को छोटा और मात्र मनोरंजक कहकर उनकी उपेक्षा की गयी |महाराष्ट्र की पहली महिला उपन्यासकार काशीबाई कनितकर ने १८९० के दशक में लेखन प्रारंभ किया तथा ठीक उसी समय महाराष्ट्र की पहली महिला डाक्टर आनंदीबाई जोशी ने अपनी शिक्षा पूरी की |प्रगति के इन लक्षणों के बावजूद जिस माहौल में ये महिलाऐं रहतीं थीं ,वह बड़ा रुखा और असहिष्णु था |लेकिन शिक्षा प्राप्त करने की आकांक्षी इन महिलाओं ने , जिनमें चाहे गुरुदेव टैगोर की पुत्री स्वर्ण कुमारी देवी हों या सरला देवी घोषाल या ताराबाई शिंदे या बंग महिला के नाम से ख्यात राजेंद्र बाला घोष या चन्द्रकिरण सोनरेक्सा या आज के सुदूर अंचलों की वे लड़कियां जो सरलता से शिक्षा नहीं प्राप्त कर पा रही थीं ,इन्होंने हर कठिनाई पर, हर बाधा पर विजय प्राप्त की क्योंकि वे जानती थीं -

'मुक्ति की चाहत को
सपनों की दुनिया से
बाहर लाना होगा |

मुक्ति की चाहत को
बस चाहत ही बने रहने देना
बुड्ढा कर देगा |
मुक्ति की चाहत को
अदम्य लालसा ही नहीं
दुर्निवार जरुरत बनाना होगा |' [कात्यायनी]

सन्दर्भ स्रोत -

१ -कुमार राधा -स्त्री संघर्ष का इतिहास [१८००-१९००]

२ - किश्वर मधु -द डावर्स आफ आर्यावर्त [विमेन इन कोलोनियल इंडिया -जे .कृष्णमूर्ति]

३ - घोष श्रबासी - बर्ड्स इन केजेज़ [इ[आइडियल इमेजेज एंड रियल लाइफ -एलिस थार्नेर एवं मैत्रयी कृष्ण राज]

४ - सरकार तनिका -ए बुक ऑफ हर ओन, ए लाइफ ऑफ हर ओन [हिंदू वाइफ -हिंदू नेशन -तनिका सरकार]